Dr.pragya kumari
Asst.prof.
Dept.of psychology
H.D.Jain college Ara

Scanned with CamScanner

Neisser Model.

Neisser ने selective attention की व्याख्या- Bottleneck theory Eg Norman and Bobrow द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत- से एकदम अलग तरीके से किये हैं। Neisser का कहना है कि व्यक्ति में सूचनाओं को- संसाधित- करने की- एक सीमित- क्षमता- होती है। कोई- दैहिक या मानसिक ढंग- से स्थापित सीमा नहीं होती है कि हमलोग- एक समय में कितनी- सूचना- पर- ध्यान- दे सकते हैं। Neisser ने अपने इस सिद्धांत- में इस बात पर बल डाला है कि सूचनाओं की- सीमित मात्रा पर ही- व्यक्ति- एक समय- में ध्यान दे पाता है। यदि बहुत सारी- सूचनाएँ व्यक्ति को एक साथ- दी जाती- है तो उसमें कुछ ही- सूचना- पर व्यक्ति- ध्यान- दे पाता है। इस तरह के सिद्धांत- से प्रोत्साहित- कर- कुछ न्यूरोशास्त्री- ने तंत्रिका तंत्र में व्याप्त filtering mechanism की खोज- के लिए- शोध प्रारंभ- कर- दिया- है। इन शोधों से स्पष्ट हुआ- है- कि मस्तिष्क- में अरबों न्यूरोन्स- होते हैं जो एक- दूसरे से सम्बन्धित- होते हैं तथा- इनकी- क्षमता- भी- असीमित-

Scanned with CamScanner

होती है। यही कारण है कि दीर्घकालीन स्मृति का आकार तथा चंद सेकेंड पहले की घटनाओं एवं सूचनाओं को याद रखने की क्षमता आदि असीमित होती है। उसी तरह से किसी एक समय मे व्यक्ति सूचना की कितनी मात्रा पर ध्यान दे पायेगा, यह भी सीमित नहीं होती है।

Neisser ने इस तथ्य को स्वीकार किया है कि दिन-प्रतिदिन की जिन्दगी में यदि एक ही साथ व्यक्ति कई चीजों या कामों को करना प्रारंभ करता है तो उसका निष्पादन थोड़ा जरूर प्रभावित हो जाता है। परन्तु अभ्यास से धीरे-धीरे उसके निष्पादन में सुधार हो जाता है और व्यक्ति एक साथ कई उद्दीपकों पर ध्यान देने में समर्थ हो जाता है। इस तथ्य का समर्थन हमे कई प्रयोगात्मक अध्ययनों से हुआ है। Spelke, Hirst & Neisser 1976 ने इस सिलसिले मे एक महत्वपूर्ण अध्ययन किया जिसमें college के छात्रों को मन ही मन कहानी पढ़ते समय प्रयोगकर्ता द्वारा बोले जाने

वाले असंगत शब्दों के लिखते जाने का भी प्रशिक्षण दिया जाता। इस तरह से कुछ छात्रों को एक ही समय में दो जटिल कार्यों को करने का प्रशिक्षण दिया जाता। कुछ दिनों तक इस तरह के अभ्यास के बाद देखा गया कि ऐसे छात्र इन दोनों तरह के कार्यों को ठीक ढंग से करने में सफल रहे हालांकि प्रारंभ में इनका निष्पादन उत्तम नहीं था। Shaffer, 1975 ने भी अपने प्रयोग के आधार पर उक्त तथ्य की सम्पुष्टि किया है। इन्होंने अपने अध्ययन में स्पष्ट रूप से पाया है कि अभ्यास से एक महिला typist उच्च गति से type करने के साथ-साथ बोले जा रहे गद्यांश के अंशों को भी सही-सही बोल भी लेती थी।

Scanned with CamScanner